॥ ॐ ह्रीं श्री कल्याण पार्श्वनाथ स्वामिने नमः ॥
॥ श्रीमद् आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥
॥ वर्तमान पट्टधर गच्छाधिपति श्रुतभास्कर आचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरन्धर सूरीश्वर सद्गुरवे नमः ॥

परमार क्षत्रियोद्धारक गुरु श्री इन्द्रदिन्न सूरि
जन्म शताब्दी वर्ष
1923 - 2023

घर घर पाठशाला

17-30 साल के बालक-बालिकाओं के लिए

शुभ आशीर्वाद प्रदाता

गुरु आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरि म.सा. के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति

श्रुतभास्कर जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरधंर सूरीश्वर जी म.सा.

सद्प्रेरणा

गणिवर्य श्री धर्मरत्न विजय जी म.सा.

शुभ निश्रा प्रदाता

प.पू प्रवर्तनी साध्वी श्री अभय श्री जी म.सा की सुशिष्या

साध्वी श्री कल्पज्ञा श्री जी म.सा आदि ठाणा-6

आयोजक - भगवान श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन नवयुवक मंडल, लुधियाना
संचालन समिति - श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन मंदिर, किचलू नगर, लुधियाना
निवेदक- श्री आत्मानंद जैन सभा (रजि.), लुधियाना

गुरु स्तुति

भवोदधि-तारणपोत, मात त्रिशलासुत वंदो ।
हे जी, तपागच्छ- श्रीकार, पाट वंदी आणंदो ।।

परतिख शारदपूत, आतमानंद सूरिरायो।
हे जी, मिथ्यामत परिहार, शुद्ध मारग अपनायो ।।

युगद्रष्टा कोहिनूर, विजय वल्लभ सूरिराजे ।
हे जी, जिनआणाप्रतिबद्ध, सुजस महीतल गाजे ।।

निर्मल निश्चल संत, समुद्र सूरि जग सोहे ।
हे जी, समता साधक गुरूराय, मुक्ति-सोपान आरोहे ।।

क्षत्रियकुल-प्रतिबोध, वीर वाणी प्रसरावे ।
हे जी, इन्द्रदिन्न सूरिंदेव, जयकमला जग पावे ।।

तस पट्टे केसरी सिंह, रत्नाकर सूरि प्रतापी ।
हे जी, प्रखर संयम तपतेज, शिथिलता थर-थर कांपी ।।

संप्रति धर्मधुरंधर, चउविहसंघ धुरा-धोरी ।
हे जी, जयवंत सुधर्मापाट, 'आशिष' मांगे कर जोरी।।

नवपद जी

तत्व त्रयी

देव	गुरु	धर्म
अरिहंत	आचार्य	दर्शन ,ज्ञान
सिद्ध	उपाध्याय	चरित्र,तप
	साधु	

कर्म

कर्म तो अनन्त है किन्तु उनकी मूल प्रकृतियाँ आठ हैं।

1. ज्ञानावरणीय
2. दर्शनावरणीय
3. वेदनीय
4. मोहनीय
5. आयुष्य
6. नाम
7. गोत्र
8. अन्तराय

नव अंग पूजा के दोहे

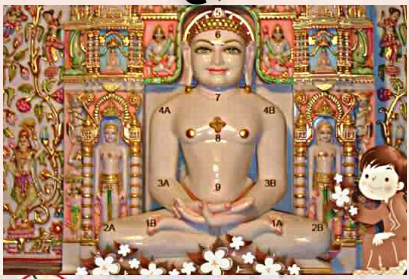

1. चरण :

जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायक भवजल अंत ॥ 1 ॥

जब भगवान के अभिषेक के लिए युगलिक पत्तों में पानी लेकर आए तब तक इन्द्र महाराजा ने भक्तिपूर्वक प्रभु को वस्त्रों और गहनों से सजा दिया। इसलिए युगलिकों ने प्रभु के अंगूठे पर जल से पूजा की। हे प्रभु मैं भी जल पूजा द्वारा अपने भवजल (भव भ्रमण) का अंत चाहता हूँ।

2. जानु :

जानु बले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश
खड़ा-खड़ा केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ 2 ॥

हे प्रभु, आपने अपने घुटनों (जानु) के बल पर काउस्सग्ग किया और विहार किया। खडे-खडे आपने केवल ज्ञान भी प्राप्त किया। आपकी इस जानु पूजा के प्रभाव से मेरे जानु में भी वह ताकत प्रगट हो।

3.हाथ के कांडे :

लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरषीदान ।
कर कांडे प्रभु पूजना, पूजो भवी बहुमान ॥ 3 ॥

प्रभु आपके सम्मान में भी दोनों हाथो से वरषीदान देकर दीक्षा लेकर अपना कल्याण करुं।

4. खंभे (कंधा) :

मान गयुं दोय अंश थी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजा बले भव जल तर्या, पूजो खंध महंत ॥ 4 ॥

हे प्रभु आप इन कंधो (खंभे) के बल से भव सागर से तिर गए। आपकी इस पूजा से मेरा भी अहंकार चला जाए और मोक्ष जाने की ताकत मेरी भुजाओं को मिले।

5. शिखा :

सिद्धशिला गुण उजली, लोकांते भगवंत ।
वसिया तिणे कारण भवि, शिरशिखा पूजंत ।। 5 ।।

आप इस लोक के सबसे ऊँचे भाग यानी, सिद्धशिला पर जा बसे हो। मुझे भी वह स्थान प्राप्त हो, इसलिए मैं आपके मस्तक शिखा की पूजा करता हूँ।

6. ललाट :

तीर्थंकर पद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ।। 6 ।।

हे प्रभु आप तीनों लोको में पूज्य हो इसलिए आप तीन लोक के तिलक समान हो, इसलिए आपके भाल को तिलक कर मैं भी तीर्थंकर पद पाना चाहता हूँ।

7. कंठ :

सोल प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुल ।
मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल ।।

हे प्रभु, आपने लगातार 16 प्रहर (48 घंटे) तक देशना देकर मनुष्यों, तिर्यंचों और देवताओं का उद्धार किया। मुझें भी ताकत मिले कि मैं सद्गुणों की अनुमोदना करुँ और लोगों का भला करुं।

8. हृदय :

हृदय कमल उपशम बले, बाल्या राग ने रोष ।
हिम दहे वनखंड ने, हृदय तिलक संतोष ।। 8 ।।

जिस प्रकार भयंकर बर्फ की बारीश जंगल को जमा कर नाश कर देती है उसी प्रकार आपने अपने हृदय में राग–द्वेष का नाश कर दिया है। आपके ऐसे हृदय की पूजा करने से मुझे भी वैसी समता गुणों की प्राप्ति हो।

9. नाभि :

रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगुण विसराम ।
नाभि कमल नी पूजना, करतां अविचल धाम ।। 9 ।।

आपकी नाभि में सारे सद्गुण विद्यमान है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र का खजाना है। अत: आपकी इस नाभि की पूजा से मुझे भी सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र मिले और मैं भी मोक्षसुख प्राप्त करुं।

नवअंग का महत्व

उपदेशक नव तत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद ।
पूजो बहुविध राग थी, कहे शुभवीर मुणिंद ।। 10 ।।

प्रभु ने नवतत्त्वों का उपदेश दिया। इसलिए प्रभु के नवअंग की पूजा बहुमान पूर्वक करनी चाहिए। प्रभु की पूजा से अपने अंदर नवतत्त्व का ज्ञान होता है।

अष्टप्रकारी पूजा के नाम

जल पूजा

दीपक पूजा

चंदन पूजा

अक्षत पूजा

पुष्प पूजा

नैवेद्य पूजा

धूप पूजा

फल पूजा

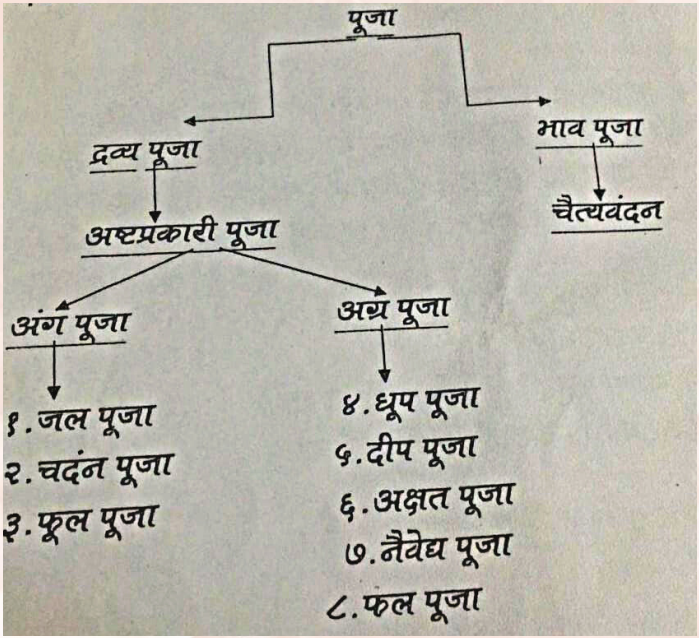
पूजा
द्रव्य पूजा
भाव पूजा
चैत्यवंदन
अष्टप्रकारी पूजा
अंग पूजा
अग्र पूजा
१. जल पूजा
२. चदंन पूजा
३. फूल पूजा
४. धूप पूजा
५. दीप पूजा
६. अक्षत पूजा
७. नैवेद्य पूजा
८. फल पूजा

गति कितनी उनके नाम

1. मनुष्यगति

2. देवगति

3. नरकगति

4. तिर्यंचगति

इरियावहियं सूत्र

1. इरियावहियं सूत्र

(IRIYAVAHIYAM SOOTRA)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
ICHCHHAKARENA SANDISAHA BHAGAVAN !

इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं !
IRIYAVAHIYAM PADIKKAMAMI ? ICHCHHAM !

इच्छामि पडिक्कमिउं !
ICHCHHAMI PADIKKAMIUM !

इरियावहियाए विराहणाए !
IRIYAVAHIYAE VIRAHANAE !

गमणागमणे !
GAMANAGAMANE !

पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे
PANAKKAMANE, BEEYAKKAMANE, HARIYAKKAMANE,

ओसा–उत्तिंग पणग–दगमट्टी–
OSA- UTTINGA-PANAGA-DAGA MATTEE-

मक्कडा संताणा संकमणे !
MAKKADA SANTANA SANKAMANE !

जे मे जीवा विराहिया ।
JE ME JEEVA VIRAHIYA |

एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया !
EGINDIYA, BEINDIYA, TEINDIYA, CHAURINDIYA, PANCHINDIYA !

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया,
ABHIHAYA, VATTIYA, LESIYA, SANGHAIYA, SANGHATTIYA,

परियाविया, किलामिया, उद्दविया,
PARIYAVIYA, KILAMIYA, UDDAVIYA,

ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया,
THANAO, THANAM, SANKAMIYA, JEEVIYAO VAVAROVIYA,

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।।
TASSA MICHCHHAMI DUKKADAM ॥

भावार्थ: इस सूत्र में चलते–फिरते, आते–जाते अपने द्वारा जीव–हिंसा आदि होने के कारण लगे हुए पापों को नष्ट करने के लिए पूर्व क्रिया रुप मिच्छामि दुक्कडं दिया जाता है।

EXPLANATION: Whatever sins are incurred or commited in going and coming are removed by this sootra.

इरियावहियं

इरियावहियाए
विराहणाए
गमणागमणे

जे मे जीवा विराहिया

एगिंदिया

बेइंदिया

तेइंदिया

चउरिंदिया

पंचिंदिया

अभिहया

वत्तिया

लेसिया

संघाइया

संघट्टिया

परियाविया

किलामिया

उद्दविया

ठाणाओ ठाणं संकामिया

जीवियाओ ववरोविया

तस्स मिच्छामि दुक्कडं

पाणक्कमणे

बीयक्कमणे

हरियक्कमणे

ओसा-उत्तिंग

पणग-दगमट्टी

मक्कडा-संताणा
संकमणे

नवपद जी के नाम, गुण, वर्ण

देव तत्त्व

1	अरिहंत	सफेद	12
2	सिद्ध	लाल	8

गुरू तत्त्व

3	आचार्य	पीला	36
4	उपाध्याय	हरा	25
5	साधु	काला	27
	पंच परमेष्ठि के गुण		108

धर्म तत्त्व

6	दर्शन	सफेद	67
7	ज्ञान	सफेद	51
8	चारित्र	सफेद	70
9	तप	सफेद	12
	नवपद के गुण		308

जैन बालक की पहचान

बाल-संस्कार गीत

ये बातें कभी न भूले

ये बातें कभी न भूले (2)
जय अरिहंत, जय अरिहंत (2)

सुबह सवेरे जल्दी उठे, माता-पिता को नमन करें,
प्रभु के दर्शन, पूजन करें, ये बातें कभी न भूले ।।

रात्रि भोजन कभी न करें, आलू-कांदा कभी न खाये।
द्विदल-अभक्ष्य कभी न खाये, ये बातें कभी न भूले।।

बैठे-बैठे खाये वे मानव कहलाये, खडे-खडे खाये वे दानव कहलाये।
जैसे-तैसे कभी न खाये, ये बातें कभी न भूले।

टी.वी. विडियों कभी न देखे, अपशब्द कभी न बोले,
झूठ-चोरी कभी न करें, ये बातें कभी न भूले।

भाई-बहन कभी न लड़े, बडो के सामने कभी न बोले,
जीवन भर ये याद रखें, ये बातें कभी न भूले।।

बड़े होकर वज्रस्वामी बने, साधु नहीं तो श्रावक बने,
कुमारपाल जैसे धर्मी बनें, ये बातें कभी न भूले।

2. पंचिंदिय सूत्र

(PANCHINDIYA SOOTRA)

पंचिंदिय संवरणो,
PANCHINDIYA SAMVARANO

तह नवविह बम्भचेर गुत्तिधरो,
TAHA NAVA VIHA BAMBHACHERA GUTTIDHARO

चउविह कसाय मुक्को,
EHAUVIHA KASAYA MUKKO

इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो
EAH ATTHARASA GUNEHIM SANJUTTO

पंच महव्वय जुत्तो,
PANCHA MAHAVVAYA JUTTO

पंच विहायार पालण समत्थो,
PANCHA VIHAYARA PALANA SAMATTHO

पंच समिओ तिगुत्तो,
PANCHA SAMIO TI GUTTO,

छत्तीस गुणो गुरु मज्झ
CHHATTEESA GUNO GURU MAJZA

स्थापना मुद्रा

(सामायिक पारते समय)
उत्थापन मुद्रा

भावार्थ: इस सूत्र में श्री आचार्य महाराज (गुरु) के छत्तीस गुणों का वर्णन है। कोई भी धार्मिक क्रिया करते समय स्थापनाचार्यजी की स्थापना करने के लिये यह सूत्र बोला जाता है।

EXPLANATION: In this sootra, are shown, the thirty six virtues of the revered acharya maharaja and this is recited at the times of doing the establishment of the acharya. One who possesses these thirty six virtues of the acharya maharaja and one who is awarded the designation of acharya is called acharya

सामायिक लेने के पाठ विधिसहित

सर्वप्रथम चरवले से भूमि साफ कीजिए, फिर चौकी आदि उच्च स्थान पर ठवणी रख कर उसके ऊपर जिस धार्मिक पुस्तक में नवकार मंत्र और पंचिंदिय (स्थापना सूत्र) हो वह पुस्तक और जपमाला (नवकार वाली) रखकर और स्वयं चार बालिश्त (ढ़ाई से तीन फुट) पीछे हट कर अपना आसन बिछाइये और उसके ऊपर चौकड़ी (पालथी) लगाकर बैठिये और चरवले की डंडी अपने बाएं घुटने पर रखिये। दाहिने हाथ को औंधा कर ठवणी के सन्मुख रख कर एक 'नवकार मंत्र' तथा 'पंचिंदिय' के पाठ से स्थापना स्थापन करिये, जैसा की नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

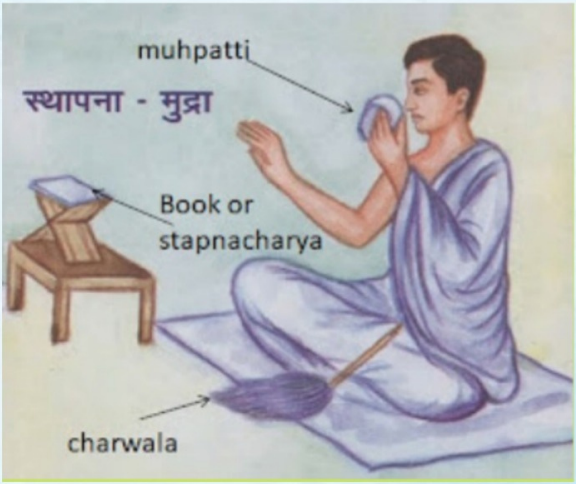

1. नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच-नमुक्कारो
सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं।

2. पंचिंदिय सूत्र

पंचिंदिय-संवरणो, तह-नवविह बंभचेर, गुत्तिधरो।
चउविह-कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो। 1।
पंच-महव्वय-जुत्तो, पंचविहायार पालण-समत्थो।
पंच-समिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मज्झ। 2।

विशेष- अगर स्थापनाचार्य जी हों तो नवकार तथा पंचिदिय सूत्र पढ़ने की आवश्यकता नहीं।

अब खड़े होकर 'खमासमण सूत्र' का पाठ पढ़ते हुए पंचांग खमासमण दीजिये।

3. खमासमण अथवा प्रणिपात सूत्र

इच्छामि खमासमणो!
वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए,
मत्थएण वंदामि ।।

(खमासमण देते हुए दोनों हाथ दोनों घुटने तथा मस्तक भूमि से लगने चाहियें।)

4. इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं ।।
इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए ।।
गमणागमणे। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे,
ओसा उत्तिंग, पणगदग मट्टी-मक्कडा, संताणा-संकमणे।।
जे मे जीवा विराहिया।।
एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया।।
अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,
किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ
ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।

5. तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।।

6. अन्नत्थ (आगार) सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं,
उड्डुएणं, वाय- निसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए।।
सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ।।
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ।।
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ।।
ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।।

खड़े-खड़े ही दोनों पावों के अंगूठों का आपस में चार अंगुल का अंतर रखकर और एड़ियों के पास कुछ कम अंतर रख कर अपने दोनों बाजू नीचे की तरफ सीधे करिये तथा अपनी आंखें ठवणी के ऊपर टिकाइये। बायें हाथ में चरवला तथा दायें हाथ में मुंहपत्ति पकड़नी होती है तथा मन ही मन जीभ तथा होंठ हिलाए बिना हिलने डुलने से रहित-एक लोगस्स का 'चंदेसु निम्मलयरा' तक या चार नवकार का कायोत्सर्ग कीजिए।)

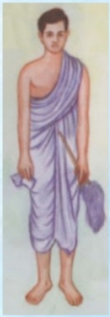

7. लोगस्स (नाम-स्तव) सूत्र

लोगस्स उज्जो अगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।। 1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमई च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे।। 2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल, सिज्जंस, वासुपुज्जं च
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।। 3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।। 4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय रय-मला पहीण-जर मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।। 5।।
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरूग्ग- बोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।। 6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागर वर गम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।। 7।।

(फिर खमासमण दीजिए)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।।

(अब पावों के बल बैठ कर मुंहपत्ती खोलते हुए कहिए)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सामायिक मुंहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं।

(मुंहपत्ति पडिलेहते हुए पहले कन्नी वाली साईड अपने दोनों हाथों में पकड़नी चाहिये। ध्यान रहे कि मुंहपत्ती पडिलेहण की इस विधि का सामायिक करते समय तथा सम्पूर्ण करते समय बराबर उपयोग हो।)

मुंहपत्ति पडिलेह कर फिर एक खमासमण दीजिये।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए,
मत्थएण वंदामि।।

(और इसी अवस्था में बैठे हुए थोड़ा झुक कर मुंहपत्ति को पलटते हुए) मुंहपत्ती सहित दोनों हाथ मस्तक से लगाकर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं? इच्छं।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।।

फिर ऊपर बतलाए हुए के अनुसार निम्नलिखित पाठ पढिए

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सामायिक ठाउं? इच्छं।

(जब चरवला हो तो खड़े होकर मस्तक झुकाकर दोनों हाथ जोड़कर और यदि चरवला न हो तो बैठे-बैठे एक नवकार पढ़िये और कहिए)

इच्छकारी भगवन! पसाय करी सामायिक दण्डक उच्चरावो जी।

(यदि गुरूदेव जी विराजमान हों तो उनसे उच्चरावें या अपने से पहले किसी व्यक्ति ने सामायिक ली हो तो उससे उच्चरावें, अगर किसी ने भी न ली हो तो अपने आप निम्नलिखित पाठ पढ़ लेवें)

सामायिक लेने का 'करेमि भंते' सूत्र

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

पुनः ऊपर बताये अनुसार निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! बेसणे संदिसाहुं? इच्छं।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

फिर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! बेसणे ठाउं ? इच्छं ।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

फिर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं।

फिर खमासमण दीजिए

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

फिर निम्नलिखित पाठ पढ़िये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सज्झाय करूं? इच्छं।

(पुनः बैठ जाइये और दोनों हाथ जोड़ कर तीन नवकार पढ़िये और दो घड़ी (48 मिनट) तक स्वाध्याय करिए या माला गिनिये)

सामायिक पारने की विधि

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

(इस प्रकार खमासमण पूर्वक पहले की तरह इरियावहियं, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ का पाठ बोलकर चंदेसु निम्मलयरा तक लोगस्स न आवे तो चार नवकार का काउस्सग्ग करें और 'नमो अरिहंताणं' बोलकर प्रगट लोगस्स कहें। फिर खमासमण देकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुँहपत्ति पडिलेहुँ ? 'इच्छं' (कहकर पचास

बोल से मुहपति पडिलेवे) (फिर खमासमण देकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारूं ? 'यथाक्ति' (फिर खमासमण देकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्यु ? 'तहत्ति' (कहकर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रखकर व मस्तक को झुकाकर एक नवकार गिनकर सामाइय वय जुत्तो बोलना।

फिर स्थापनाचार्यजी के सामने दाहिना हाथ उल्टा (अपने मुँह के सम्मुख खड़ा रखकर) एक नवकार गिने ।

जं किंचि सूत्र

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाई, ताइं सव्वाइं वंदामि

सामाईय वय - जुत्तो० (सामायिक पारण) सूत्र

सामाइय-वय-जुत्तो, जाव मणे होइ नियम -संजुत्तो ।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥
सामाइयंमि उकए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि करने में जो कोई अविधि हुई हो वह सभी मन-वचन-काया से मिच्छामि दुक्कडं ।
दश मन के दश वचन के बारह काया के ऐसे बत्तीस दोषमें से जो कोई दोष लगा हो तो वह सभी मन-वचन-काया से मिच्छामि दुक्कडं

पार्श्व प्रभु की स्तुति

अश्वसेन सुत वंदन करिये पाप पडल सब हरिये जी।
वामानंदन परदुख भंजन सेवत शिव पग धरिये जी
पुरिसादानी पास जिनेसर देखत तन मन ठरिये जी।।
दीक्षा लाधी संजम साधी आतम कारज करीये जी ।।

पार्श्वनाथ जी की जय चिंतामणि

जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी
अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी।।1।।
प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीओ प्रभु
नामे भव भवतणां, पातक सब दहीओ।।2।।
ॐ ह्रीं जोड़ी करी, जपीओ पार्श्वनाम विष
अमृत थई परिणामे, लहीओ अविचल ठाम

चैत्यवंदन आज देव

आदि देव अरिहन्त नमूं, सिमरूं तारूं नाम । जहां-जहां प्रतिमा जिनतणी, तहां-तहां करूं प्रणाम ॥१॥
शत्रुंजय श्री आदि देव, नेम नमूं गिरनार । तारंगे श्री अजित नाथ, आबू ऋषभ जुहार ॥२॥
अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चौबीसे जोय । मणिमय मूरति मानसुं भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥
सम्मेत शिखर तीरथ बड़ो, जहां वीशे जिन पाय । वैभारिक गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥४॥
मांडवगढ़ नो राजियो, नामे देव सुपास। 'ऋषभ' कहे जिन समरतां, पहुंचे मन की आस ॥५॥

भाव-पूजा

खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणगदग मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे। जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।।

अन्नत्थ (आगार) सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय- निसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ।।

(अन्नत्थ सूत्र पढ़ते हुए एक 'लोगस्स' का 'चंदेसु निम्मलयरा' तक या चार नवकार काउसग्ग करिये)

फिर 'नमो अरिहंताणं' कहते हुए काउसग्ग पार कर, प्रकट लोगस्स पढ़ें तथा खड़े हो रह कर निम्नलिखित पाठ पढ़िये–

खमासमण सूत्र

तदन्तर दोनों हाथ, दोनों घुटने तथा मस्तक भूमि पर टेक कर पंचांग प्रणाम करते हुए तीन खमासमण दीजिए ।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।
इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।
इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

(चित्र में प्रदर्शित स्थिति के अनुसार दाहिने घुटने को जमीन पर टेक कर बायां घुटना सीधा खड़ा कीजिए, दोनों हाथ जोड़ कर दोनों हाथों की अंगुलियां 'योग मुद्रा' सहित बराबर एक-दूसरे हाथ की अंगुलियों के बीच-बीच में मिलाइये। दोनों अंगूठों को समान स्थिति में रखकर कुहनियां पेट से लगाकर बैठिये और कहिये)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! चैत्यवंदन करूं ? इच्छं ।

अब (पूर्वाचार्य कृत)
निम्नलिखित एक चैत्यवंदन पढ़िए।

चैत्यवंदन

सकल कुशल वल्ली, पुष्करावर्त्त मेघो, दुरित तिमिर भानुः,
कल्प वृक्षोपमानः ।

भव-जल-निधि-पोतः, सर्व-सम्पत्ति-हेतुः, स भवतु सततं वः
श्रेयसे शान्तिनाथः ।। श्रेयसे पार्श्वनाथः

।। श्री तीर्थों का चैत्यवंदन ।।

आज देव अरिहंत नमूं, सिमरूं तारू नाम।
जहां जहां प्रतिमा जिनतणी, तहां-तहां करूं प्रणाम ।
शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमूं गिरनार।
तारंगे श्री अजितनाथ, आबू ऋषभ जुहार ।।
अष्टापद गिरी ऊपरे, जिन चौबीसे जोय ।
मणिमय मूरति मानसुं भरत भरावी सोय ।।
सम्मेतशिखर तीर्थ बड़ो, जहां बीसे जिनपाय।
वैभारिक गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ।
मांडवगढ़ नो राजियो, नामे देव सुपास।
ऋषभ कहे जिन समरतां, पहुंचे मन की आस ।।

।। जंकिंचि सूत्र ।।

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाई, ताइं सव्वाइं वंदामि ।।

2. नमुत्थुणं सूत्र

NAMUTTHUNAM SOOTRA

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं
NAMUTTHUṆAṂ ARIHAṆTĀṆAṂ BHAGAVAṆTĀṆAṂ || 1 ||
आइगराणं, तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं
ĀIGARĀṆAṂ, TITTHAYARĀṆAṂ, SAYAṂ-SAṂBUDDHĀṆAṂ || 2 ||
पुरिसुत्तमाणं, पुरिस सीहाणं, पुरिस वर पुंडरीयाणं,
PURISUTTAMĀṆAṂ, PURISA-SEEHĀṆAṂ, PURISA-VARA PUṆDAREEĀṆAṂ,
पुरिस वर गंध हत्थीणं
PURISA-VARA GAṆDHAHATTHEEṆAṂ || 3 ||
लोगुत्तमाणं, लोग नाहाणं
LOGUTTAMĀṆAṂ, LOGA-NĀHĀNAM

लोग-हियाणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जोअगराणं
LOGA-HIYĀṆAṂ, LOGA-PAEEVĀṆAṂ, LOGA-PAJJO-A GARĀṆAṂ || 4 ||
अभय दयाणं, चक्खु दयाणं
ABHAYADAYĀṆAṂ CHAKKUDAYĀṆAṂ
मग्ग दयाणं, सरण दयाणं, बोहि दयाणं
MAGGADAYĀṆAṂ, SARAṆADAYĀṆAṂ, BOHIDAYĀṆAṂ || 5 ||
धम्म दयाणं, धम्म देसयाणं
DHAMMA DAYĀṆAṂ, DHAMMA DE'SAYĀṆAṂ
धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं
DHAMMA NĀYAGĀṆAṂ, DHAMMA SĀRAHIṆAṂ

धम्म वर चाउरंत चक्कवट्टीणं
DHAMMAVARA CHĀURAṆTA CHAKKAVAṬṬIṆAṂ || 6 ||

अप्पडिहय वरनाण दंसण धराणं
APPAḌIHAYA-VARANĀṆA DAṆSAṆADHARĀṆAṂ

वियट्ट छउमाणं
VIYAṬṬACHHAUMĀṆAṂ || 7 ||

जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं
JIṆĀṆAṂ JĀVAYĀṆAṂ, TINNĀṆAṂ TĀRAYĀṆAṂ

बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं
BUDDHĀṆAṂ BOHAYĀṆAṂ, MUTTĀṆAṂ MOAGĀṆAṂ || 8 ||

सव्वन्नूणं सव्व दरिसीणं
SAVVANNOOṆAṂ SAVVADARISIṆAṂ

सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय
SIVA-MAYALA-MARUA-MAṆAṆTA MAKKHAYA

मव्वाबाह मपुणरावित्ति
MAVVĀBĀHA - MAPUṆARĀVITTI

सिद्धिगई नामधेयं ठाणं संपत्ताणं
SIDDHIGAI NĀMADHE'YAM, ṬHĀṆAṂ SAMPATTĀṆAṂ

नमो जिणाणं जिअ भयाणं
NAMO JIṆĀṆAṂ, JIA BHAYĀṆAṂ || 9 ||

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सन्ति णागए काले
JE' A-AEEĀ SIDDHĀ, JE' A BHAVISSAṆTI ṆĀGAE KĀLE,

संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि
SAMPAI A VAṬṬAMĀṆĀ, SAVVE' TIVIHE'NA VAṆDĀMI || 10 ||

भावार्थ: इस सूत्र द्वारा शक्रेन्द्र अरिहंत भगवान की उनके सर्वश्रेष्ठ गुणों के वर्णन से स्तुति करते है।

Explanation: In this sootra there are virtues of arihant bhagavana. The indra maharaja prays the tirthankara at the time of all five auspicious occasions "Panch Kalyanak" with this very sutra. The other name of this sutra is Shakrastava.

3. जावंति चेइआइं सूत्र

JAVANTI CHEIAIM SOOTRA

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ,
JĀVAṆTI CHE'IĀIṂ, UḌḌHE A AHE'A TIRIA LOE' A

सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं

SAVVĀIṂ TĀIṂ VAṆDE', IHA SAṆTO TATTHA SAṆTĀIṂ || 1 ||

भावार्थ: इस सूत्र से तीनों लोक में स्थित सर्व जिन चैत्यों को नमस्कार किया जाता है।

Explanation: By this sootra salutations are offered to all the jina pratimas situated in the upper, the middle and the lower worlds

4. जावंत केवि साहू सूत्र

JAVANTA KEVI SAHOO SOOTRA

जावंत के वि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ,

JĀVAṆTA KE'VI SĀHOO, BHARAHE'RAVAYA MAHĀVIDE'HE A

सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं

SAVVE'SIṂ·TE'SIṂ PAṆAO, TIVIHE'NA TIDANDA VIRAYĀNAṂ ||·1 ||·

भावार्थ: इस सूत्र में सभी भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में स्थित सर्व श्रमणों को नमस्कार किया जाता है।

Explanation: By this sootra obeisance is offered to all the monks and nuns (sadhus and sadhvis) who are in the Bharat, Airavata and Mahavideha kshetra.

5. पंच परमेष्ठि नमस्कार सूत्र

PANCHA PARAMESHTTHI NAMASKARA SOOTRA

नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य :

NAMORHAT SIDDHĀCHĀRYO PĀDHYĀYA SARVA SĀDHUBHYAḤ || 1 ||

भावार्थ: श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि द्वारा दृष्टिवाद नामक पूर्व में से उद्धृत इस सूत्र से श्री पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है।

Explanation: By this Sootra obeisance is offered to the panchparamesthis which is composed by shri siddhsena divakara suri.

6. उवसग्गहरं स्तोत्र

UVASAGGAHARAM STOTRA

उवसग्गहरं पासं

UVASAGGA-HARAṂ PĀSAṂ

पासं वंदामि, कम्म घण मुक्कं

PĀSAṂ VAṆDĀMI, KAMMA-GHAṆA MUKKAṂ

विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं

VISAHARA VISA NINNĀSAṂ, MAṆGALA KALLĀṆA ĀVĀSAṂ || 1 ||

विसहर फुलिंग मंतं

VISAHARA PHULIṆGA MAṆTAṂ

कंठे धारेइ जो सया मणुओ

KAṆṬHE DHĀRE'I JO SAYĀ MAṆUO

तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं
TASSA GAHA ROGA MĀREE, DUṬṬHAJARĀ JAṆTI UVASĀMAṂ || 2 ||

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु फलो होइ
CHIṬṬHAU DOORE MAṆTO, TUJZA PAṆĀMO VI BAHUFALO HOI

नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं
NARA-TIRIE'SU VI-JEEVĀ, PĀVAṆTI NA DUKKHA DOGACCHAṂ || 3 ||

तुह सम्मत्ते लद्धे,
TUHA SAMMATTE LADDHE',

चिंतामणि कप्प पायव ब्भहिए
CHIṆTĀMAṆI KAPPAPĀYA-VABBHAHIYE'

पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं
PĀVAṆTI AVIGGHE'ṆAṂ, JEEVĀ AYARĀMARAṂ ṬHĀṆAṂ || 4 ||

इअ संथुओ महायस
IA SAṆTHUO MAHĀYASA

भत्तिब्भर निब्भरेण हियऐण
BHATTIBBHARA NIBBHAREṆA HIYE'ṆA

ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद
TĀ DE'VA DIJJA BOHIṂ, BHAVE BHAVE PĀSA JIṆACHAṆDA || 5 ||

भावार्थ: श्री भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित इस सूत्र में सर्व विघ्नों को दूर करने वाले श्री पार्श्वनाथ प्रभु के गुणों की स्तुति की गयी है।

Explanation: This is the stavana in praise of shri parshvanath prabhu. All the calamities are removed by this similiarly having recited this stavana the request for the attachment of the right faith is made. This sootra is composed by acharya bhagvan shri bhadrabahu swami

7. जय वीयराय सूत्र
JAYA VEERAYA SOOTRA

जय वीयराय जग गुरु
JAYA VEEYARĀYA ! JAGA - GURU !

होउ ममं तुह प्पभावओ भयवं
HOU MAMAṂ TUHA PABHĀVAO BHAYAVAṂ

भव निव्वेओ, मग्गाणुसारिया इट्ठ फल सिद्धि
BHAVANIVVE'O MAGGĀṆU-SĀRIĀ IṬṬHA-FALA-SIDDHI || 1 ||

लोग विरुद्धच्चाओ, गुरुजण पुआ
LOGA-VIRUDDHACHCHĀO GURUJAṆA POOĀ

परत्थ करणं च, सुहगुरु जोगो
PARATTHAKARAṆAṂ CHA, SUHAGURU-JOGO

तव्वयण सेवणा, आभवमखंडा
TAVVAYAṆA-SE'VAṆĀ, ĀBHAVAMAKHAṆḌĀ || 2 ||

वारिज्जइ-जइ वि नियाण, बंधण वीयराय तुह समये
VĀRIJJAI JAIVI NIYĀṆA, BAṆDHAṆAṂ VEEYARĀYA ! TUHA SAMAYE'

तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं
TAHAVI MAMA HUJJA SE'VĀ, BHAVE' BHAVE TUMHA CHALAṆĀṆAṂ || 3 ||

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ
DUKKHAKKHAO KAMMAKKHAO

समाहि मरणं च बोहि लाभो अ
SAMĀHI MARAṆAṂ CHA BOHILĀBHO A

संपज्जऊ मह एअं तुह नाह पणाम करणेणं
SAṂPAJJAU MAHA EAM, TUHA NĀHA ! PAṆĀMA KARAṆEṆAṂ || 4 ||

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम्
SARVA-MAṆGALA-MĀṆGALYAṂ, SARVA-KALYĀṆA-KĀRAṆAṂ

प्रधाणं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम्
PRADHĀNAṂ SARVA DHARMĀṆĀṂ, JAINAṂ JAYATI SHĀSANAṂ || 5 ||

भावार्थ: इस सूत्र द्वारा प्रभु से आत्म कल्याण के लिए निर्दोष एंव उत्तम तेरह प्रार्थनायें की गयी है।

Explanation: By this sootra the request is made to the prabhu for 13 best virtues.

8. अरिहंत चेइयाणं सूत्र
ARIHANTA CHEIYANAM SOOTRA

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं
ARIHANTA CHE'IYĀṆAṂ, KARE'MI KĀUSSAGGAṂ

वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए
VAṆDAṆA-VATTIYĀE, POOAṆA-VATTIYĀE'

सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए
SAKKĀRA-VATTIYĀE', SAMMĀṆA-VATTIYĀE'

बोहिलाभ-वत्तिआए, निरुवसग्ग-वत्तिआए
BOHILĀBHA-VATTIYĀE', NIRUVASAGGA-VATTIYĀE' || 1 ||

सद्धाए, मेहाए, धीईए,
SADDHĀE', ME'HĀE', DHIIE'

धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए
DHĀRAṆĀE', ANUPPE'HĀE', VAḌḌHAMĀṆIE'

ठामि काउस्सग्गं (अन्नत्थ.....)
ṬHĀMI KĀUSSAGGAṂ (ANNATHA.....) II 2 II

भावार्थ: इस सूत्र में जिन प्रतिमाओं की आराधना के लिए काउस्सग्ग करते समय की भावनाओं का वर्णन है।
Explanation: In this sootra, there is description of the emotions while performing the kaussagga for the adoration of the JINA idols.

C. विधि विभाग

1. चैत्यवंदन विधि

(चैत्यवंदन यह भाव पूजा है, अतः इसके प्रारम्भ में तीन बार निसीहि बोलनी चाहिए।)

1. सबसे पहले **खमासमण सूत्र** बोलकर एक खमासमण देना
2. फिर नीचे के सूत्र खडे रहकर बोलना –
   इरियावहियं सूत्र, तस्स उत्तरी करणेणं सूत्र, अन्नत्थ ऊससिएणं **सूत्र**
3. इसके बाद "एक लोगस्स न आवे तो चार नवकार" का काउस्सग्ग करके हाथ जोडकर **लोगस्स सूत्र** बोलना।
4. फिर खमासमण सूत्र अलग अलग तीन बार बोलकर तीन खमासमण देकर बाद में यह आदेश मांगना
5. **इच्छाकारेण संदिसह भगवान ! चैत्यवंदन करुं ? इच्छं** (कहकर (Left) बाया पैर खडा करके बैठकर नीचे का सूत्र हाथ जोडकर बोलना)
6. **सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्तमेघो, दुरिततिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः**
   भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स भवतु सततं वः श्रेयसे शांतिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथः ।।
7. फिर चैत्यवंदन बोलना (हो सके वहां तक मूलनायक भगवान का चैत्यवंदन बोलना)
8. फिर **जंकिंचि सूत्र, नमुत्थुणं (शक्रस्तव) सूत्र** बोलना
9. फिर ललाट पर दोनो हाथ जोडकर **जावंति चेइयाइं सूत्र** बोलना
10. फिर खमासमण देकर ललाट पर दोनो हाथ जोडकर **जावंत केवि साहू सूत्र** बोलना
11. फिर **नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्य :** बोलकर स्तवन बोलना
    (न आवे तो उवसग्गहरं सूत्र बोलना)
12. फिर ललाट पर दोनों हाथ जोडकर **जयवीयराय सूत्र** बोलना।
13. बाद में खडे होकर **श्री अरिहंत चेइयाणं सूत्र** बोलना।

13. बाद में खडे होकर **श्री अरिहंत चेइयाणं सूत्र** बोलना।

14. फिर **अन्नत्थ सूत्र** बोलना, बाद में एक नवकार का काउस्सग्ग करके **नमोऽर्हत्.** बोलकर स्तुति बोलना।

15. बाद में एक **खमासमण** देकर पच्चक्खाण का आदेश मांगना –
इच्छकारी भगवान पसाय करी पच्चक्खाण नो आदेश देजोजी। (फिर यथाशक्ति पच्चक्खाण करना)

16. फिर **आव्यो** शरणे तुमारे... इत्यादि स्तुति बोलकर परमात्मा को मोती अथवा चावल से वधाणा चाहिए।

17. फिर एक खमासमण देकर जीमना हाथ जमीन पर एवं बांया हाथ मुंह के पास रखकर निम्न वाक्य बोलना **विधि करता जो कुछ अविधि, आशातना हुयी हो, उसके लिए मन, वचन, काया से मिच्छामि दुक्कडं।**

18. अंत में **जिनशासन देव की जय हो** ऐसा बोलना चाहिए।

घर घर पाठशाला

कल्याण कंद

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं
संतिं तओ नेमिजिणं मुणिदं,
पासं पायसं सुगुणिक्कठाणं ,
भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं.....1

अपार संसार समुद्दपारं,
पत्ता सिवं दिंतु सूइक्कसारं,
सव्वे जिणींदा सुरविंदवंदा,
कल्लाण-वल्लीण-विसाल-कंदा.....2

निव्वाण-मग्गे वर-जाण-कप्पं,
पणासिया सेस कुवाइ-दप्पं;
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं,
नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं,.....3

कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसा-रवन्ना ,
सरोज-हत्था-कमले-निसन्ना ,
वाऐसिरी पुतथ्य-वग्ग-हत्था ,
सुहाय सा अम्ह सया पसत्था.....4

श्री वल्लभ गुरु के चरणों में

श्री वल्लभ गुरू के चरणों में,
मैं नित उठ शीश नमाता हूँ
मेरे मन की. कली खिल जाती है,
जब दर्श तुम्हारा पाता हूँ ।।1।।
मुझे वल्लभ नाम ही प्यारा है,
इस ही का मुझे सहारा है।
इस नाम में ऐसी बरकत है,
जो चाहता हूँ सो पाता हूँ ।।2।।
जब याद तेरे गुण आते हैं,
दुःख दर्द सभी मिट जाते हैं।
मैं बन कर मस्त दीवाना फिर,
बस गीत तेरे ही गाता हूँ ।।3।।
गुरूराज तपस्वी महामुनि,
सिरताज हो तुम महाराजों के।
मैं इक छोटा सा सेवक हूँ,
कुछ कहता हुआ शरमाता हूँ ।।4।।
गुरू चरणों में हे अर्ज यही,
बढ़ती दिन-रात रहे भक्ति।
मेरा मानुष जन्म सफल होवे,
यही भक्ति का फल चाहता हूँ ।।5।।